पुष्पांजलि

भजन माला

लेखक :

राज दुलारी कदलबुजू

(मस्तानि)

बोहरी, तालाब तिल्लो, जम्मू-2

दूरभाष : 48548

पुष्पांजलि

भजन माला

लेखक :

राज दुलारी कदलबुजू

(मस्तानि)

बोहरी, तालाब तिल्लो, जम्मू-2

दूरभाष : 48548

© सर्वाधिकार प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं ।

मूल्य : 20/- रुपये

मुद्रक :- ज्योती प्रिन्टर्ज़, पटोली जम्मू ।
प्रतियां—200

भूमिका

मैं बहुत ज़्यादा लिखने का अभ्यासी नहीं हूं। में यदि ईश्वर भजन भी करता हूं वह भी मूक भाषा में ही। ईश्वर की कृपा से आज मैं कुछ लिखने का अवसर पा रहा हूं। जिन के बारे में लिख रहा हूं, वह मेरी बहुत ही निकटतम हैं। मुझे यह असीम प्रसन्नता हो रही है कि मां सरस्वती ने इस महानात्मा पर नि:संदेह ही असीम कृपा की है। अति निकट रहने के कारण मैं उनकी प्रतिक्षण प्रति पल हरेक क्रिया को देखता रहा हूं। प्रारम्भिक अवस्था में सारी रात कुछ न कुछ बोलती रहती थी। अर्ध स्वप्न अवस्था के कारण मैं कुछ स्पष्ट सुनता था और कुछ नहीं। प्राय: प्रात: होते ही वह सब मैं भूल जाता था। इस प्रकार मैं अपने को दु:खी मानता था। अत: उन्हें बार-बार निवेदन करता था कि वह जो कुछ बोलती हैं कागज़ पर लिखा करें। अन्त में मेरा प्यार उस के प्रति जीत गया और उसने अपनी भावनाओं को भजन के रूप में लिखना शुरू किया। समय बीतता गया। वह अपने प्रभु के चिन्तन का हर पल भजन में ही लिखती रही। नि:संदेह उस के इन भजनों में आप प्रेम, भक्ति, वियोग और उपासना के सब भाव देखेंगे। यह सब उन्होंने चेतन और अचेतन अवस्था में लिखा।

मुझे अति प्रसन्नता हो रही है कि वह अपने हिन्दी भजनों का पहला संग्रह प्रकाशित कर रही हैं। यह उन का अपना ही परिश्रम है। इस में किसी का योगदान नहीं रहा। इन सब में उस के अपने गुरू महाराज स्वामी ईश्वर स्वरूप जी की ही असीम कृपा है।

मुझे आशा है पाठक जन इस का लाभ उठायेंगे।

एम० एल० कदलबुजू

"दो शब्द"

मेरी यह हिन्दी भजनावली का दूसरा प्रयास है। प्रथम पुस्तक तो कश्मीरी कविताओं का संग्रह छप चुका है। वह केवल हमारी कश्मीरी जाति बरादरी ही समझेगी। अतः मेरे भाव जो अटपटे बोल हैं, जिन को लिखने में केवल दाता का ही हाथ है। कुछ हिन्दी में भी लिखे गये, जो मैं अपने पाठक जनों तक पहुंचाने का प्रयास कर रही हूं। यह मेरी भावना के अध खिले सुमन हैं। मुझे आशा है कि इस साधारण भाषा को जनता पसन्द करेगी। यह भी गुरुदेव को समर्पित करती हूं।

गुरू चरणों की धूल
राज दुलारी कदलबुजू

ॐ श्री गणेशाये नमः

जय गणेशा, गणनाथा।
कृपा करो, हे कृपालो भगवन ॥

द्वार पर आई हूं अनाथा।
दया करो, हे दयालो भगवन ॥

तू ही सिद्धि विनायक सहायक।
तू ही भक्तों के निर्णायक।
मेरी विनती सुन लो दाता ॥

प्रथम ध्यान करू गणपति गणनाथक,
जो सदा करें कल्याण।

दूसरा सोंपती गुरु महाराज को,
जो मुझे विद्या का दें ज्ञान।

तीसरा नमन करूँ सदाशिव को,
जो मुझे देंगे, भक्ति का वरदान।

चौथा स्मरण करती हूं मां भवानी का,
जो लिखने में रखें मेरा मान।

कृपा की वर्षा बरसी

देखो कृपा की, वर्षा बरसी।
आओ आओ, आनन्द मनाओ।
मन मगन, दीवानी दरषी।।
आओ, आनन्त को पावो।।

अष्टसिद्धि, नवनिधि आयी।
मन मेरे, में ही समायी।
मां आओ, ना तरसाओ।।
आओ आनन्द......

मां मुझ से, रूठ न जाना।
मेरे मन में ही, बस जाना।
मेरी अन्तर ज्योति जगाओ।।
आओ आनन्द......

हे मानवा, तू क्यों भटका।
जग के द्वन्धों में अटका।
मां हर्ष है, तुम हर्षाओ।।
आओ आनन्द......

जीवन दो दिन का मेला।
जाना तो सब को अकेला।
ईश्वर तत्व को, अपनाओ।।
आओ आनन्द......

हम पर मां, कृपा तू करना।
हर वर्ष यहीं तो रहना।
और रच रच के भोग लगाओ॥
आओ आनन्द......

हे मां, दे दें मुझे फकीरी।
अब ना कर लो देरी।
आज राज को, मत तरसाओ॥
आओ आनन्द मनाओ।

आज मुझे श्याम मिला

सुन सखी, आज मुझे, श्याम मिला।
मेरी साधना का, मुझे ईनाम मिला॥

मोर मुकट पीताम्बर साजे।
अब वह सदा, मेरे मन में विराजे।
उन्हें भी कहीं, मेरा प्रमाण मिला॥

हाथ में मुरली, गले वैजन्ती।
यही तो भक्तों का मन, हरती।
मुझ को यही इक काम मिला॥

श्वास श्वास में है, तेरा बसेरा।
मैं हूं आप की, तुम हो हमारे।
ढूंढा उसे, वह निजधाम मिला॥

आज मेरे मन में मस्ती छाई।
जन्मों की साधना, सफल हो पाई॥
"राज" को परम धाम मिला।
सुन सखी आज मुझे श्याम मिला॥

—●—

रे मन अब क्या

अरे मन, अब क्या, लेना यहां।
मर गई तेरी (सारी) इच्छा जहां।
रख लेगा, दाता ही मुझ पर निगाह।०।

बिन मांगे कुछ, मिलता नहीं।
मन का कमल, खिलता नहीं।
खोज ले सच्ची सुथरी राह।०।
अरे मन......

जागा है तू पर, देर से जागा।
भाग गया तू, पर दूर न भागा।
बेशक तू रहता है तन्हा।०।
अरे मन......

शरण गया हो, वह वर लेगा ही।
अवसर से तू, कभी तर लेगा ही।
ऐसी ही सद्ध गुरू की है चाह।०।
अरे मन......

हे प्रभु दीजिऐ अटल विश्वास।
मैं भी रहूंगी, तेरे दासों की दास।
ध्यान में डूबूँ उत्तम है समा॥
अरे मन......

होगा कुछ नहीं, हरि इच्छा भिन्न।
रहता है क्यों तुम, हर पल फिर खिन्न।
देखता सब कुछ, खुद ही खुदाह॥
अरे मन......

होगा जिस का, तुम्हें इन्तिज़ार।
शायद वही है तेरा दिलदार।
वह तुम से, होगा नहीं जुदाह॥
अरे मन......

चार दिनों की यह जिन्दगानी।
बाकी सब कुछ, आनी जानी।
चलता जा, मत कर परवाह॥
अरे मन......

जिस ने हरि का नाम लिया।
उस ने सच्चा अमृत पिया।
राज तो आज बनी श्माह॥
अरे मन......

भजन

दाता ही दाता, स्मर प्यारे।
वहीं तो तेरा है, सद्घगुरु प्यारे॥

जब तुम में, दिख जाये प्रकाश।
मिल गया, समझो, जीवन साराश।
चुपके से, जीवित ही, मर प्यारे॥

सब की सुध, अब बिसरा दे।
पापी मन को, ज़रा समझा दें।
लम्बी उस की, डगर प्यारे॥

जीते जी तू, त्याग दे सारा।
तबी बनेगा, ईश्वर सहारा।
फिर किसी से ना, डर प्यारे॥

इतना झमेला क्यों करना है।
इक दिन तो सब को मरना है।
बुद्धि को ही प्ररवर, कर प्यारे॥

कितने जन्मों सें, तू भटका है।
कभी तुझे यह, नहीं खटका है।
सामने काल भवँर प्यारे॥

कल जो करना, आज ही करले।
पल भर का, विश्वास न करले।

"राज" की माया, हर प्यारे ।
दाता ही दाता, स्वर प्यारे ।
वहीं तेरा सद्धगुरु प्यारे ॥

—●—

हे प्रभु

हे हे, प्रभु करो कल्याण ।
पहले दीजिऐ, भक्ति दान ।
दूसरा पाऊँ में, तेरा ही मान ॥

सुख दुख की, इस छाया में ।
तू ही सहारा, इस काया में ।
कैसे भूलूं मैं, तेरा ज्ञान ॥

बहुत कठिन है, मन बस करना ।
हर पल, हरि नाम स्मरणा ।
लम्बी है इस मन की उड़ान ॥

निर्भय जा तू कठिण डगर पर ।
कोई पता नहीं, शेष उमर पर ।
गाता जा रे हरि गुण गाण ॥

कितने जन्मों का लगा है डेरा ।
कभी तो होगा, तेरा सवेरा ।
सच्ची बात ही, करो बयान ॥

त्याग दे इस मोह माया को।
लगन लगा लें, प्रभु छाया की।
देखना सत्य ही कितना महान॥

आज जो जन्मे, वही पराये।
यह तो जीवन के सरमाये।
चुप रह, खोल नहीं ज़बान॥

मेंने सब कुछ आप को सौंपा।
जो भी कुछ हो, वह तो है तेरा।
"राज" को केवल तेरा गुमाण।
हे प्रभु, मेरा करो कल्याण॥

दिन बीत गये

दिन बीत गये हैं साल।
अब आओ ना, गोपाल।
हो जाऊंगी माला माल॥
अब आवो ना......

यूँ ही बीती सारी उमरिया।
मेरी खाली पडी है गगरिया।
मेरे गले पडा जंझाल॥
अब आवो ना......

मैं अपने पर रुसवाह हूं।
संसार से बेपरवाह हूं।
मेरे पीछे पड़ा है काल॥
अब आवो ना......

तेरी कर लूं, चणनों की बन्दना।
तुम काटो मेरे, भव बन्दना।
जोवन मेरा है बेताल॥
अब आवो ना......

सत्संग की महिमा बारी।
तेरी प्रीत लगे मुझे प्यारी।
कब पूछोगे मेरा हाल॥
अब आवो ना......

दरबार तुम्हारा अटल है।
मिलने को इच्छा, मेरी प्रबल है।
मस्तानी की देखो मस्ती चाल॥
अब आओ ना......

तेरी "राज" तुम्हारी दासी।
तेरे दरस की, हूं मैं प्यासी।
मेरी भक्ती करो बहाल॥
अब आओ ना......

मेहर कीजिए

दाता हम पर भी, मेहर कीजौ।
भक्ति का दान, हमें अब दीजौ।

दाता काहे, मैं भटकी हूं।
जैसे सूली पर मैं लटकी हूं।
चाहे प्राण मेरे हर लीजौ।
दाता हम पर भी मेहर कीजौ।।

तेरे दर की मैं हूं भिखारी।
मिलने की करती, तैयारी।
अमृत के प्याले पीजौ।
दाता हम पर भी मेहर कीजौ।।

देखो घणघोर घटा छाई है।
तेरी दासी शरण आई।
सत्य धाम दिखा दीजौ।
दात हम पर भी मेहर कीजौ।।

कोई अपना नहीं इस जग में।
कोई सपना नहीं, मेरे मन में।
कोई अद्धभुत दृश्य दिखाइयौ।
दाता हम पर भी मेहर कीजौ।।

केवट ने आप को गंगा पार किया।
भवसागर से मोक्ष का दान दिया।

मुझे भी अब पार कीजौ।
दाता हम पर भी मेहर कीजौ॥

कितने सन्तों की सेवा की।
कितनों को सिर नवाया।
अब उबार आप ही लीजौ।
दाता हम पर भी मेहर कीजौ॥

"राज" को तुम अपना लो।
भक्ति का खज़ाना दे दो।
अपने चरणों की धूल समझो।
दाता हम पर भी मेहर कीजौ॥

जाग रे मानव

जाग रे मानव मत सोया कर।
बीता समय नहीं आयेगा॥

चार दिनों का जगत का मेला।
पीछे तू पछतायेगा॥

कुछ तो काम भली का कर ले।
खाली हाथ तू जायेगा॥
माया ममता में, फंसता क्यों है।
यहां तू कुछ नहीं पायेगा॥

चेत तू मन से, चेत ज़रा सा।
हरि भजन कब गायेगा ॥

बीत गई है सारी उमरिया।
कभी उजाला छायेगा ॥

अभी समय है नाम स्मर ले।
वहीं प्रभु को पायेगा ॥

छोड दे यह जगत के धन्धे।
धूनी रमा, भस्मी बन जायेगा ॥

दूर अभी है तेरी मंज़िल।
पीछे क्यों रह जायेगा ॥

मांग ले दाता से, जो मांगेगा ॥
झोली तेरी भर जायेगा ॥

मैं भी फकीरन तेरे दरस की।
कोई यहां कभी आयेगा ॥

मस्त रहो मस्ती में "मस्तानी"।
हस्ती वह दे जायेगा ॥

मन से पुकारो, प्रभु को कहीं भी।
चुपके तार जुडायेगा ॥

दूर गगन में बैठा है गुम सुम।
राज को संदेशा पहुंचायेगा ॥

जाग रे मानव, मत सोया कर।
बीता समय नहीं आयेगा ॥

चार दिनों का रैन बसेरा

चार दिनों का रैन बसेरा।
जोगिया यह है, जोगी ढेरा।
मत कर, मन अब, तेरा मेरा॥
जोगिया यह है .....

कब जाना है, कब जायेगा।
तू नज़र नहीं, किसी को आयेगा।
दूर भगा दे माया अन्धेरा॥
जोगिया यह है......

सच्ची प्रीत, प्रीतम से लगा ले।
हर दम गीत, उसी के गा ले।
ईक दिन आयेगा, सच्चा सवेरा॥
जोगिया यह है .....

इस जगत के देख नज़ारे।
कुछ नहीं रहने वाला है प्यारे।
डूबा हुआ क्यों मन घनेरा॥
जोगिया यह है......

आ मैं सब को कहूं कहानी।
दो सांसो की यह ज़िन्दगानी।
राज को आज मिले भजेरा॥
जोगिया यह है......

मुझे कोई राह बता दो राम

मुझे कोई पथ, दरशा दो राम।
जिसे भूल न जाऊँ, तेरा नाम।
मेरे रामा, मेरे राम, हे राम ॥

जीवन में आजाये, कठिनाई।
चारों तरफ अन्धेरी छाई।
नित्य मैं कर लूं तुम्हें प्रणाम ॥
मेरे राम, हे राम, सिया राम ॥

तेरे दर पर मैं आई हूं।
भावना के फूल, चुन लाई हूं।
और नहीं मुझे कोई काम।
मेरे रामा, हे राम, सिया राम ॥

हे प्रभु, दौड के तुम आजाना।
अपनी भिखारिन को गले लगाना।
जीवन का आ गया शाम ॥
मेरे रामा, हे राम, सिया राम ॥

पछताने से अब क्या होगा।
जो होगा वह अच्छा होगा।
राज को पहुंचाओ अपने धाम।
मेरे राम, हे राम, सिया राम ॥

दो सांसों का जीवन

दो सांसों का जीवन तेरा।
मत कर बन्दे ऐतिबार॥

यहां तो रहना सपना सा है।
बन्द पड़े सब द्वार॥

आना तेरा सब को भाया।
जावोगे कहां शुमार॥

तूने क्यों यह, सब सजाया।
जमाह किये धन ध्यार॥

ईक दिन, सब को यहां से जाना।
बिन लालच निराधार॥

माता पिता और बच्चे भरता।
इस पिंड का व्यवहार॥

यह जीवन छोटा सा नाटक।
झूठा सब संसार॥

अब तो छोड दे, झूठी ममता।
खोज ले खुद दातार॥

बचपन बीता खेल खेल में।
बीती जवानी बहार॥

आया बुढापा थर थर कांपा।
हुआ तृष्णा का विस्तार॥

गया समय अब कहां आयेगा।
राज ने खोजा जात आधार॥

दो सांसों का जीवन तेरा।
मत कर बन्दे ऐतिबार॥

मेरी मां

मुझे कहीं भी छिपा लो मां।
कभी अपना, बना लो मां॥

मैं तेरे दर पर आई हूं।
टूटे मन को, संग लाई हूं।
कोई राह दिखा दो मां।
मुझे अपना बना लो मां॥

हे अम्बे मां भवानी।
कीजो हम पै, मेहरबानी।
अब कहां, जाऊं बता दो मां।
मुझे अपना बना लो मां।

तेरे दम से, जगत है सारा।
मेरा कौन है, और सहारा।
मेरी भावना, परखा लो मां।
मुझे अपना बना लो मां॥

तूने कितने ही परचे भेजे।
मुझे सारे खरचे भेजे।
मेरे मन पर छा लो मां।
मुझे अपना बना लो मां॥

यह कितनी प्यारी गाथा।
तेरा मेरा मीठा नाता।
मुझे कभी समझालो मां।
मुझे अपना बना लो मां॥

तुम "राज" की सुनो पुकार।
वह ढूढंती तेरा ही द्वार।
मेरे संग तू भी गा लो मां।
मुझे अपना बना लो मां॥

—●—

कष्ट निवारो

हे दाता, मेरा कष्ट निवारो।
मेरे मन का, बोझ उतारो,

कहां छिपे हो, मेरे खिवैया।
बीच भवँर में है मेरी नैया।
भवसागर से पार उतारो।
हे दाता मेरा कष्ट......

ज्ञान ध्यान मुझे, कुछ नहीं आता।
तेरे सिवा, मुझे कुछ नहीं भाता।
बिगडा है भाग्य, तुम ही संवारो।
हे दाता मेरा कष्ट......

भाव भीनी से, मैं विनय करूंगी।
तेरे दर से कभी न हटूंगी।
मेरे दर्द को तुम ही फुहारो।
हे दाता मेरा कष्ट .....

मस्त रहे जो, तेरी मस्ती में।
सब कुछ मिलता, तेरी हस्ती में।
मेरी समस्या तुम ही विचारो।
हे दाता मेरा कष्ट......

लख जन्मों की लगी है टेरी।
कहां लगाई श्याम तूने देरी।
मेरा तू ही एक सहारा॥
हे दाता मेरा कष्ट......

जन्म जन्म की मैं तेरी दासी।
सागर किनारे भी हूं प्यासी।
राज को आज तुम ही पुकारो॥
हे दाता मेरा कष्ट......

जिस का तुम

जिस का तुम करते हो कल्याण।
निर्धन भी है, वह धनवान।

जिस पर रहती है, आप की छाया।
उस को व्यापती, कभी न माया।
जग में सारे तो, वहीं महान॥
जिस का तुम......

जिस ने आप को अपना बनाया।
परम पद भी, उसी ने पाया।
उस की हर दम निराली शान॥
जिस का तुम......

जिस ने गल्त किया न बहाना।
उस का सुख दुख समाना।
उस को मिला है, भक्ति दान॥
जिस का तुम......

जिस ने कण कण में तुम्हें देखा।
उस की तो उत्तम है, भाग्य रेखा।
मिलता उसी को आत्म ज्ञान।
जिस का तुम......

हर जर्रे में है, तेरा वास।
मैं तो हूं तेरे चरणों की दास।

मुझ को दीजिऐ अमृतबाव ॥
जिस का तुम......

अन्त समय जब मेरा आयेगा।
तेरा दर्श मन पायेगा।
राज सुनेगी मुरली तान ॥
जिस का तुम......

तूने तो सांई

तूने तो सांई मुझ को,
दीवाना बना दिया।

ऐसी पिलायी मस्ती,
मस्ताना बना दिया।

हर पत्ते में तुम ही हो,
और हर डाली में तेरा वास।
इतनी रची है माया,
बेगाना बना दिया।

चन्द सांसों का यह जीवन।
काहे रखे हो बन्धन।
इतनी तो मेरी चाहत।
अफसाना बना दिया॥

जीवन तो यूं बिताया।
क्या खोया क्या पाया।
मन को तो खुद तपाया।
परवाना बना दिया॥

घबरा नहीं तू प्यारे।
पूरे होंगे वादे हमारे।
मय पी के ऐसे झूमी।
मयखाना ही बना दिया॥

मैं आई हूं शरण तिहारी।
अब लाज राखो गिरधारी।
राज आज ऐसे रोई।
पयमाना बना दिया॥

—●—

सांई बेहोश थी मैं

सांई बेहोश थी मैं, बेकरार।
ओ तेरे, आने का था, इन्तज़ार॥

जिस रात को तुम आवोगे यहां।
उस शब को मैं, जाऊँ कहां।
मन पूछता है, यह बार बार॥
तेरे आने का था.......

माना कि मैं भी फकीर हूं।
कहते हैं तुम दस्तगीर हो।
मुझे रास आया तेरा द्वार।
तेरे आने का था .....

तब मेरे मन के फूल खिले।
बिन मांगे जब मोती मिले।
मैं देखती हूं आया बहार॥
तेरे आने का था......

इस दर को छोड के अब।
किस दर पे जाऊंगी रब।
मेरा मन हुआ है तार तार॥
तेरे आने का था......

तेरी इक निगाहे कर्म से।
मेरे थोडे शुद्ध धर्म से।
दीजौ मुझ को थोडा सा करार॥
तेरे आने का था......

मैं ब्रार बार यहां जाऊंगी।
मस्तक सदा झुकाऊंगी।
मेरे जीने का तू ही है सार॥
तेरे आने का था......

जोगी हो तुम, दाता हो तुम।
जाने कहां रहती हूं गुम।
आज राज को होना है पार॥
तेरे आने का था......

आज मेरे घर

आज मेरे घर आये हैं भगवान।
देखो कैसी अद्भुत शान।
भूल गई मैं निजि पहचान॥
आज मेरे घर......

शबरी तर गई, मीरा तारी।
अब तो दाता है, मेरी बारी।
होगा मेरा भी कल्याण॥
आज मेरे घर......

ध्रुव तारे प्रह्लाद उबारे।
भूल गये क्यों वादे सारे।
मुझे भी दीजो भक्ति दान॥
आज मेरे घर......

तूने मुझे अनमोल प्यार दिया।
प्यार दिया, उपकार किया।
तब मैं थी कितनी नादान॥
आज मेरे घर......

जब जब भक्त भगवान से मिलते।
जाने कहां मन के, फूल खिलते।
भक्ति भाव से बनूं हनुमान॥
आज मेरे घर......

तूफानों फंसी मेरी नैया।
आके पकड़ ले मेरो बैंया।
सोंपती "राज" तुम्हें मन प्राण॥
आज मेरे घर.....

—●—

शरण में रखना

शरण में रखना, मुझे मेरे दाता।
बेशक मुझ को, ध्यान न आता॥

जो होगी यहां मेरी रुसवाई।
जग में होगी, तेरी भी हंसाई।
तेरे सिवा हमें, कुछ नहीं भाता॥
शरण में रखना......

हे करूणामय, करूणा ही काजै।
भक्ति गागर में ज्ञान का सागर भर दीजै।
जग से टूट गया मेरा नाता॥
शरण में रखना......

तू ही मेरी नैया के खेवनहार।
भवंर में फंसी हूं उतारो पार।
तू ही मेरे जीवन धूप के छाता॥
शरण में रखना......

चरणों में मुझ को रख लेना।
खोज खबर भी कभी लेना।
माया को मेरा मन नहीं पाता॥
शरण में रखना......

सब राजों के, हो सरताज।
मेरे मन में बसो महाराज।
राज को केवल तुम से नाता॥
शरण में रखना .....

—●—

कभी कभी भगवान

कभी कभी भगवान, भक्त के बस में हो जाते हैं।
चोरी चोरी, चुपके चुपके मिलने को आ जाते हैं॥

भक्ति भाव से मैंने रोया।
भगवान, क्या पाया, क्या मैंने खोया।
भक्तिदान देकर वह, भक्ति नन्दन कहलाते हैं॥
कभी कभी भगवान......

मैंने गुणगान तुम्हारे गाये।
मन प्राणों में तुम ही समाये।
तेरी दया की किरण हो, मुस्कान भी पा जाते हैं॥
कभी कभी भगवान......

मुझे चरणों में रखलो स्वामी,
तुम ही तो हो, अन्तरयामी।
हर बार, हर पल हम तो, तेरे ही गुण गाते हैं ॥
कभी कभी भगवान......

इक बार चले आओ।
मुझ को ना तरसाओ।
नित्य नये धीरज, हम को बन्धाते हो ॥
कभी कभी भगवान......

मत माया में डुबाओ।
भव सागर से पार लगाओ।
इस आंसू के उपवन में, हम को सैर कराते हो ॥
कभी कभी भगवान......

यह तन मन धन है तेरा।
तुम मुक्ति बन्धन हो मेरा।
मत संशय करना प्राणी, कह के वह मुस्काते हैं।
कभी कभी भगवान......

मेरा अम्बर सागर तुम हो।
मेरा सद्गुरु ईश्वर तुम हो।
सारांश जगत का क्या हो वह मुझे बतलाते हैं ॥
कभी कभी भगवान......

मैं कितने आंसू

मैं कितने आंसू बहाती हूं।
दाता, धीरज तो बन्धा के जा।।

मैं कितना मन को रुलाती हूं।
मेरी खोज खबर तो पूछ के जा।।

मैं तुम्हें मना कर हारी।
फिरती हूं दर्द की मारी।।

तुम्हें सांस सांस बुलाती हूं।
मिल कर मुझे, कभी तो जा।।

तेरा पाके सबल सहारा।
कैसे भूल मैं जाऊं किनारा।।

मन पीडा को छिपाती हूं।
इक बार दवाई तो, देके जा।।

यह रात की बेला छल छल सी।
मुझे नींद न आये इक पल भी।।

मैं मन का दीपक जलाती रहूं।
तू प्रकाश उस में, देके जा।।

तुम्हें शपथ है मेरे मन की।
तुम आना प्रकाश बन के।।

मैं नयन सदा बिछाती रहूंगी।
तुम मुझ पगली "राज" को मुक्ति दे जा।।
दाता धीरज बन्धा के जा।

दाता मैं तुम्हें

सांई मैं तुम्हें ढूंढ के, जोगन बन जाऊंगी।
इन जन्मों के बन्धन से, इक दिन मुक्ति पाऊंगी॥

मैं बन बन फिर कर भी तेरा अलख जगाऊंगी।
मेरे रुठे हुऐ दाता, बस तुझ को मनाऊंगी॥

मैं ध्यान भी पाऊंगी, भजन भी गाऊंगी।
मन प्राण बना कर फूल, तुम को ही चढाऊंगी॥

मैं दर्द भरे यह गीत, तुम को ही सुनाऊंगी।
नित्य नई भावना को ले कर जाऊंगी॥

तुम दया के सागर हो, यह याद दिलाऊंगी।
तेरे दर की भिखारिन हूं, यह भूल न जाऊंगी॥

इक बार कृपा तो कीजै, चित शांत मैं पाऊंगी।
यह प्यार तेरा अनमोल, बिन मोल ही बिक जाऊंगी॥

शबरी की तरह मैं भी, झूठे फल खिलाऊंगी।
इस राज दिवानी को, मस्तानी बनाऊंगी॥

समझाऊंगी

मैं मन को कैसे समझाऊंगी।
दाता तेरे द्वार पर।
मैं बार बार यहां आऊंगी॥

मेरी तो दशा हो गई, पगली सी।
मैं बन बन हिरणी ढोलती सी।
बेहोशी को होश में लाऊंगी।
मैं बार बार यहां आऊंगी॥

तुम भिन्न पल भी, नहीं कटते हैं।
मन के यह विकार नहीं हटते हैं।
यह केवल आप को, सुनाऊंगी।
मैं बार बार यहां आऊंगी॥

हे अन्तरयामी, मैं तुम्हें भूल नहीं सकती।
भिन्न तुम्हारे यहां, रह नहीं सकती।
तेरे गीत ही मैं गाऊंगी।
मैं बार बार यहां आऊंगी॥

तेरे दर की, हूं मैं भिखारी।
तेरे पथ निहारते मैं हारी।
पगले दिल को, कैसे समझाऊंगी।
मैं बार बार यहां आऊंगी॥

स्वीकारो मेरा नतमस्तक प्रणाम।
बिन मोल बिकी मैं बिन दाम।

तुझे दाता कभी तो पाऊंगी।
मैं बार बार यहां आऊंगी॥

इतनी तो मुझ पर कृपा कीजौ।
दर्शन आके मुझे दीजिऐ।
राज पूजा के फूल चढ़ाऊँगी।
मैं बार बार यहां आऊंगी॥

—●—

किस विधि

मैं किस विधि, तुम्हें रिझाऊँ राम।
प्रति पल भेजती हूं, तुम्हें प्रणाम।
स्वीकार करो मेरा प्रणाम॥

हर दम मेरी झोली फैली है।
किस ने उस में भक्ति डाली है।
और तेरा ही मुझे पैगाम मिला॥
स्वीकार करो मेरा......

चाह नहीं मुझे इस जगत की।
राह दिखा दो सच्ची भक्ति की।
जपती रहूं बस तेरा नाम॥
स्वीकार करो मेरा......

परम धाम का पथ दरशाओ।
कभी न वापिस फिर यहां लाओ।
प्रकट कभी हो जाओ घनश्याम ॥
स्वीकार करो मेरा......

मीरा जैसी भक्ति दीजिऐ।
राधा जैसी शक्ति दीजिऐ।
ढूंढती फिरूंगी बस तेरा नाम ॥
स्वीकार करो मेरा......

कलियुग को प्रभु सत्ययुग बना दो।
ज्ञान ज्योति मेरे मन में जगा दो।
राज तेरी बिक गई बेदाम ॥
स्वीकार करो मेरा......

सांई तुम संग

सांई, तुम संग, सच्ची प्रीत, मोहे लागी।
चिर उपरान्त मेरी, आत्मा जागी ॥

मैं हूं चकोरी, तुम मेरे चन्दा।
जो तुम दीपक, मैं हूं पतंगा।
इसी नियम से मेरी ममता भागी ॥
मेरी आत्मा जागी.. ...

जो तुम फूल हो, मैं हूं तेरी भंवरा।
जो तुम सूरज हो, मैं हूं किरणवा।
मेरी जीवन ढोर तुम से बान्धी॥
मेरी आत्मा जागी .....

जो तुम सागर हो, मैं तेरी नैया।
कहां छिपे हो मेरे खिवैया।
अब में क्यों समझूंगी, मैं हूं अभागी॥
मेरी आत्मा जागी......

तेरे सिवा मेरा कौन है अपना।
मैंने छोड दिया, देखना सपना।
तू ही आदि तू ही अनादि।
मेरी आत्मा जागी ...

इस दुनियां में कुछ नहीं तेरा।
क्यों करता में तेरा मेरा।
राज है तेरी राग की रागी॥
मेरी आत्मा जागी......

मैं भावना फूल

मैं भावना के फूल प्रभु ।
नित्य तुम्हें चढाऊंगी ।
मैं स्नेह के अटपटे गीत प्रभु ।
तेरे लिए ही गाऊंगी ।।

मैं जानती हूं मुझ में गुण खास नहीं ।
सच्चा या झूठा, केवल विश्वास ही ।
मेरा टूटा मन जोड़ देना ।
मैं आस बान्ध के आऊंगी ।।

तेरे आने से मेरे बाग में, बहार आई है ।
मेरे मन में खुशी की लहर छाई है ।
मैं कभी भी तेरे चरण कमल में जगह पाऊंगी ।।

उड मेरे पागल मनवा ।
तू इन्तिजार कर हरि का ।
मेरा मन तो बस तेरा है ।
मैं काट कर भी दिखाऊंगी ।।

हे जगदम्बे मां भवानी ।
मैं शरण में आई दीवानी ।
मेरे जो दर्द भरे गीतों के घाव ।
वह तुम से सदा छिपाऊंगी ।।

मां धन्यवाद लीजिऐ।
मुझे लिखने बहुत दीजिऐ।
यह प्रेम के सुमन मेरे।
तेरे चरणों में चढाऊंगी ।।

तुम मुझ को संवारो मां।
मेरी बिगडी बना दो मां।
तेरे चरणों में शीष झुके।
मैं राज भेंट लाऊंगी ।।

मैं भावना के फूल प्रभु, नित्य तुम्हें चढाऊंगी ।।

—●—

गुरु देव चले आना

मेरे गुरु देव चले भी आना।
मेरा मन हुआ तेरा दीवाना ।।

मेरी भक्ति देख ले दाता।
बिन तेरे कुछ भी नहीं भाता।
मेरी लाज आज निभाना ।।

मैं निर्गुण निरोपाय हूं।
तुम ही तो मेरे, सहाय हो।
मुझे अपने संग ले जाना ।।

मैंने खोज लिया आप हीरा।
उस ने मुझे बनाया मीरा।
भक्ति भाव की थाह पा जाना ।।

तुम ही तो शायद ईश्वर स्वरूप हो।
मेरे मन के छाया धूप हो।
मेरी आत्मा में आके समाना।

माना तुम दया के सागर हो।
हे दाता मेरी खाली गागर भरो।
मैं तेरा ही गाऊंगी तराना॥

मैं जन्म जन्म की प्यासी।
मेरी दूर करो जी उदासी।
आज राज को दरस दिखाना।
गुरु देव चले भी आना।
मेरा मन हुआ तेरा दिवाना॥

गुरु देव मेरे स्वामी

गुरु देव मेरे स्वामी।
मुझ को भक्ति दीजो।
सब सुख दुख सहने की।
मुझ को शक्ति दीजो॥

तुम ही तो, मेरे अन्तरयामी।
बोलो कहां छिपे हो स्वामी।
इस भवसर से, हमें पार लगा लीजो।
गुरु देव मेरे स्वामी॥

मैंने अपना समस्त जीवन।
तुझ पर ही किया है अर्पण।
इक बार मेरी नैया इस भंवर से निकालीजौ॥

कल सपने में तुम आये।
दर्शन भी दरशाये।
इस जीवन का भार खुद ही तो संभाल लीजौ॥

यह समय सुहाना है।
मेरा मन भी बेगाना है।
यह राज दीवानी है अपने रंग लीजौ।
गुरु देव मेरे स्वामी॥

मनवा प्रेम से बोलो

मनवा प्रेम से बोलो।
श्री राम दूताये नमाह।
मन के द्वार तो खोलो।
श्री राम दूताये नमाह॥

सुनो राम से बडा है राम का नाम।
भक्ति भावना का है, यही प्रमाण।
इस सोये चित को तोलो।
श्री राम दूताये नमाह॥

चाहे छोड़ दें सारे उस का साथ।
पर सदा रहे राम जी का उसे साथ।
सत्य से कभी न डोलो।
श्री राम दूताये नमाह।

शबरी सुनायेगी राम महिमा।
उस नें की थी तन मन सेवा।
कहती श्री राम नाम रस गोलो।
श्री राम दूताये नमाह॥

जो अन्त समय कहेगा राम नाम।
उस को मिल जायेगा परम धाम।
मन ज्ञान साबुन से धोलो।
श्री राम दूताये नमाह॥

जिसे व्रत है मंगलवार का।
उसे हित होता परिवार का।
अंजनी पुत्र संग होलो।
श्री राम दूताये नमाह॥

हे महावीर पूज्य दाता।
तुम संग जन्मों का नाता।
मन कुटिया में तुम सो लो।
श्री राम दूताये नमाह॥

थोडी सी भावना दीजिऐ।
मेरी मूर्खता. हर लीजिऐ।
श्री सरस्वती का द्वार खोलो।
श्री राम दूताये नमाह॥

भगवान शरण में आई।
मैं आज बहुत घबराई।
आज राज को तुम ही छू लो।
श्री राम दूताये नमाह्।

सुन मनवा मेरे तू

सुन मनवा मेरे, तू काहे डौले।
बस हरि ओं तत्सत, जप हौले।

जग एक खिलौना है भाई।
इस में क्यों रोना है भाई।
दिन रात, हरि भजन तू बोले॥
बस हरि ओंम तत्सत......

हो जाना जिस को, भवसर पार।
वह दाता का ही, करें इन्तिजार।
चमकेंगे भावों के शोले॥
बस हरि ओंम तत्सत......

जगदीश को समझो अपरम्पार।
वहीं तो हैं, हमारे जीवन का सार।
तेरे पाप पुण्यों को, प्रतिपल तोलें॥
बस हरि ओंम तत्सत......

उस परम पुरुष को सब जानते।
पर बिरले सन्त उसे पहचानते।
माया में फंस कर मत रो ले॥
बस हरि ओम तत्सत......

सब ज्ञानियों में दाता तेरा ज्ञान है।
मुझ को जो मिला, वह तेरा दान है।
मेरे जीवन में अमृत घोले॥
बस हरि ओम तत्सत .....

मेरा तेरा जन्मों का नाता।
मुझे तेरा ही दर्द सुहाता।
राज रानी तू अब मत रोले॥
बस हरि ओम तत्सत......

छोड के यह संसार

छोड के यह संसार के धन्धे,
दूर कहीं जाऊंगी मैं।

बैठी हूं यहां जोगन बन कर,
तेरी गली आऊंगी मैं।

व्रत और नियम रख लिये मैंने,
जप मन को जपवाऊंगी मैं।

श्वास श्वास में वास है तेरा,
खास आसन जमाऊंगी मैं।

असवन से लिख लूंगी पाती,
मन की तार से पहुंचाऊंगी मैं।

तेरा ही पथ निहारते भगवन,
कभी नहीं थक जाऊंगी मैं।

तू मेरा दाता, मैं तेरी दासी,
इतना ही याद दिलाऊंगी मैं।

भक्तों के मन में बस ले दास,
"राज" फकीर बन जाऊंगी मैं।

छोड़ के यह संसार के धन्धे,
दूर कहीं जाऊंगी मैं।

—●—

मेरे मनः मेरे

अरे मनः, तू क्यों होता उदास।
तू तो प्रभु के, दासों का दास।
केवल शिव पर कर विश्वास।।

बिखरी हुई है मन की माला।
आकर तुम ही, करो उझाला।
आयी ना माया मुझ को रास।
केवल शिव पर कर......

ओ मांझी मेरा करो उधार।
जाना है मुझ को भव से पार।
जहां करता है, दाता वास॥
केवल शिव पर कर......

सुनते हैं, तुम हो दया भंडार।
मेरी विनती करो स्वीकार।
जीना मेरा, बने ना परिहास॥
केवल शिव पर कर......

यदि कुछ दोगे, दो भक्ति दान।
उसे हो सकता, जगत कल्याण।
राज को केवल तेरी आस॥
केवल शिव पर कर......

—●—

मन मन्दिर में दाता

मन मन्दिर में दाता तू आना।
वादा न तोड़ना, वादा निभाना॥

कब से तेरी राह पे खडी हूं॥
आ भी जाओ, मैं धूल में पडी हूं।
पग पग तेरे लिए है सजाना॥
मन मन्दिर में दाता.. ...

मैं जागी, रात भर नहीं सोई।
तेरे लिए दाता कितना रोई।
मिलन का कोई, कर लो बहाना॥
मन मन्दिर में दाता .....

तेरे दर पर आई भिखारिन।
झोली भर दे, मैं हूं फकीरन।
मुझे भक्ति ने किया दिवाना॥
मन मन्दिर में दाता......

मुझ में तुझ में, इतना ही अन्तर।
मैं साधक हूं तू मेरा मन्त्र।
हे महादेव शक्ति को भी लाना॥
मन मन्दिर में दाता......

हर इक सांस में तेरा सहारा।
मुझ को देना अपना किनारा।
करती रहूंगी तेरे गुण गान॥
मन मन्दिर में दाता......

कैसे भूल में जाऊं दाता।
तेरे सिवा कुछ नजर न आता।
आजा सुनाऊं अपना फसाना।
मन मन्दिर में दाता......

तेरी जटा से गंगा बहती।
मेरे प्राणों में वह बसती।
रांज को दूर भगा ले जाना॥
मन मन्दिर में दाता......

सदाह देने तेरे

मेरा टूटा हुआ दिल है,
दीवाने आ गये हैं।

जो ज़ख्म खाये हैं मैंने,
वही दिखलाने आ गये हैं।

जो शोले मेरे, मन में कहीं है,
उन्हें बुझाने आ गये हैं।

पड़ी जब तेरी चिंगारी,
हुई तुम से मेरी यारी।

जले जब भी कहीं समा,
परवाने आ गये हैं।

लिखी कितनी ही चिठ्ठयां मैंने,
कहीं खोई तो नहीं रास्ते में।

उसी का आज हम मतलब,
समझाने आ गये हैं।

पड़ी हूं बीमार मैं कब से,
मेरा नाता केवल रब से।

बने अगर वह हकीम मेरा,
दवाह करवाने आ गये हैं।

मैं बलिहारी जाऊं तुझ पर,
तेरा ऐहसान है मुझ पर।

हम अपनी ही तकदीर,
तुम्हीं से लिखवाने आगए हैं।

मैं अपने आंसुओं से ही,
तेरे चरणों को धोती हूं।

तुझे अपने मन और प्राण लेकर,
नज़राने आ गये हैं।

तेरे रंग में अपने को रंगा,
मुझे चाहिऐ तेरा ही संग।

रहो अब राज के रंग में,
तुझे रंगवाने आ गये हैं।

सहारा जब मिला

सहारा जब मिला रब का, मैं सब कुछ भूल जाती हूं॥
पता जब पा लिया तेरा, मैं सब कुछ भूल जाती हूं॥

मेरा दिल जब भी खोता है।
मुझे मालूम होता है।
तेरे मिलने की खातिर, मैं सब कुछ भूल जाती हूं॥

दिया जिस ने दर्द मुझ को।
वही देगा दवाह मुझ को।
दवायें यार पाकर ही, मैं सब कुछ भूल जाती हूं॥

जुदाई में मेरे दाता।
मुझे रोना ही बस आता।
बहा कर आंसुओं का सागर, मैं सब कुछ भूल जाती हूं।

करो शोलों की मुश्किल हल।
सुना मैंने वुझाता अमृत जल।
तडप कर रात और दिन यहा, मैं सब कुछ भूल जाती हूं॥

दिखाया जला दिल अपना।
लगा ऐसा यह है सपना।
चुराई जब खुदी राज से, मैं सब कुछ भूल जाती हूं॥

—●—

हे जगदम्बे मां

हे जगदम्बे मां, जगजननी मां, तेरा भेद नहीं पाया।
तू मेरी मैया, मैं तेरी दासी।
बहु विधि तुझे रिझाया॥
मां तेरा भेद नहीं पाया ...

सिंह पर बैठी महारानी तू।
दुर्गा रूप धरसाया।
जिस जिस ने तेरी आरती उतारी।
वही जन तुझ को भाया॥
मां तेरा भेद नहीं पाया......

गरुड पै बैठी मैया रानी।
विष्णो रूप धरसाया।
जब जब भीड़ पड़ी भक्तों पर।
तेरा ही नाम काम आया॥
मां तेरा भेद नहीं पाया ....

बृषभ पै बैठी मां माता भवानी।
शंकर रूप धरसाया।
तेरे ही कारण हे चामुण्डा।
भक्ति भाव यहां छाया॥
मां तेरा भेद नहीं पाया।

कमल पर बैठी अष्टभुजी मां।
ब्रह्मा रूप धरसाया।
राज भी बनी मां, भिखारिन।
तेरे दर पर सीस निभाया।
सुन मेरी मैया तेरा भेद नहीं पाया......

—●—

मुझे मेरी

मुझे मेरी मैया, तेरे दर पै आना।
तेरे दर पै आकर, यह मस्तक झुकाना॥

मैं तेरे चरणों की दासी हूं माता।
तेरे मन्दिरों की वासी हूं माता।
तू ही आके मेरी, बिगडी बनाना॥
मुझे मेरी मैया......

मैं भूली हूं भटकी, जन्मों की मारी।
तुझे मेरी चिन्ता, खुद है सारी।
मुझे चुपके चुपके, गले से लगाना।।
मुझे मेरी मैया......

अगर मेरी मंजिल बहुत ही है दूर,
तू जल्दी आकर, मुझे करेगी मन्जूर।
जो वादा किया है, उसी को निभाना।।
मुझे मैरी मेया......

अगर मेरी नैया फंसेगी भंवर में।
तू जल्दी से आना, ले जाना डगर पर।
हे राज को आज, आकर काँवर चढ़ाना।
तेरे दर पै आकर यह मस्तक झुकाना।।
मुझे मेरी मैया......

फकीरों की

फकीरों की बस्ती में,
मस्ती ही मस्ती।
न कोई है अपना।
न कोई पराया।
जबी आंख उठाई।
तबी तुम को पाया।
मिलोगे कहां तुम, दस्ती ही दस्ती।।

जिगर के किसी ने।
यह टुकडे किये क्यों।
मिला जब सहारा तो चुस्ती ही चुस्ती।।

मुझे ना गिराओ।
निगाहें कर्म से।
हे राज के मन में दाता गशती।
फकीरों की बस्ती में।
मस्ती ही मस्ती।।

हे निर्बन्धन

हे निर्बन्धन मेरे श्याम।
तुम्हें लाख बार प्रणाम।

शबरी तारी गणिका तारी।
अब दाता सुनिऐ, मेरी बारी।
दूर नगर है, तेरा धाम।।
तुम्हें लाख बार......

ध्रुव तारे प्रहलाद उबारे।
कहां छिपे हो नैनों के तारे।
आओ जीवन की हो गई शाम।।
तुम्हें लाख बार......

तेरे मन्दिर नित्य मैं आऊंगी।
भावना के पुष्प चढ़ाऊंगी।

भूल गये क्यों मेरे घनशाम ॥
तुम्हें लाख बार.....

राज भिखारिन बन के आऊंगी।
चरण कमलों में शीश झुकाऊंगी।
पूर्ण करना मेरी आशा तमाम।
तुम्हें लाख बार......

जोगिया

जोगिया बात तो, मतलब की कर ले।
सुनिऐ थोडी देर ठहर ले ॥

अब तो मैंने यहां नहीं रहना।
आज या कल, छोड के जाना।
मेरी बात तो सुन के निकलना ॥

अब तो मैंने, वेष बदलना।
वेष बदल कर देश है छोड़ना।
रुक जा थोडी सांस तो भर ले ॥

इस दुनिया में कैसी यारी।
सारी तो झूठी दुनियादारी।
राज के मन की चिन्ता हर ले।
जोगिया बात तो मतलब की कर ले ॥

मेरी गली से

सुन सखी, मेरी गली से गुज़रे श्याम।
छीन लिया मेरा आराम।
भूल गये क्यों मेरा वह गांव।।
छीन लिया मेरा......

कान्हा राधा कहां खोई है।
तेरे लिए कितना रोई है।
बिक गई वह बेदाम।।
छीन लिया मेरा......

चरण कमलों में रहती थी वह।
श्याम श्याम नित्य जपती थी वह।
भेजे कितने ही पैगाम।।
छीन लिया मेरा......

तुम रहो मेरे दिल में कन्हाई।
फिरते क्यों हो अरे हरजाई।
कहां मैं खो गई बेदाम।।
छीन लिया मेरा......

करुणा मय करुणा कीजिऐ।
मेरी सुध कहीं तो लीजिऐ।
जपती रहूंगी तेरा ही नाम।।
छीन लिया मेरा......

कोई जब कहीं मिल जायेगा।
मेरा मुरजा मन खिल जायेगा।
खींच लेना दाता राज की लगाम॥
छीन लिया मेरा.....

—●—

सुन बन्दे तू कर

सुन बन्दे तू कर बन्दगी।
चार दिनों की यह ज़िन्दगी॥

खत्म न होंगे, गोरख धन्धे।
इस जग में सब हैं अन्धे।
छोड दे तू जग रूपी गन्दगी॥
सुन बन्दे तू कर......

बीत गई मेरी सारी उमरिया।
तेरे नगर की दूर डगरिया।
क्यों रखा तूने मुझ को बन्धी॥
सुन बन्दे तू कर......

धन यौवन पर मान न करना।
सच्चे मार्ग पर सदा विचरना।
भक्तों में व्यथा की नहीं मन्दी॥
सुन बन्दे तू कर.....

दुख आयेगा, घबराना नहीं।
सुख आयेगा, इतराना नहीं।
झूठी है यह जल्दी।।
सुन बन्दे तू कर......

संग न जायेगा कोई तेरा।
अन्धे कर्मों का लगा ले ढेरा।
दुनिया सारी है चरण मंगी।।
सुन बन्दे तू कर......

एक तो भक्ति मुझे दीजिऐ।
दूसरी शक्ति संग संग दीजिऐ।
राज तो हो जायेगी चन्गी।।
सुन बन्दे तू कर......

जब खोया मैंने

जब खोया मैंने सारा जीवन।
तब ही पाया, प्रभु का चिन्तन।।

दिल में तेरी लगन जो जोडी।
मैंने भक्ति ओढ़नी ओढी।
फिर सोंप दिया है तुझे तन मन।।
तब ही पाया......

रहती हूं यहां वैरागी बनकर।
सुख पाती हूं, त्यागी बन कर।
प्यार पाके तेरा हूं मैं धन धन्य॥
तब ही पाया .....

जब से संसार दिखा है सपना।
तब से होश कहां मुझे अपना।
ढोलती फिरती हूं बन बन॥
तब ही पाया......

दाता को जब मन में बसाया।
कोई दूसरा रास न आया।
ईश्वर पूर्ण करें मेरा प्रण॥
तब ही पाया......

हर रात को मैं तुझ को मनाऊं।
तेरे ही गीत पल पल गाऊं।
बस इक देना मुझे स्मरण॥
तब ही पाया......

रख लेना दाता, यूं मुझे जग में।
जैसे कमल रहता है कीचड़ में।
फिर राज को देना अपनी शरण।
जब खोया मैंने सब जीवन॥
तब ही पाया......

—●—

हे राम

हे राम, तेरा नाम ही है, निष्काम।
मेरे जीवन की, आन पड़ी है शाम।।

तेरी मंज़िल बहुत ही दूर।
तेरे भक्त यहां मजबूर हैं।
मैं ढूंढ के अब हारी लीजौ मेरा प्रणाम ।।
हे राम......

तेरे कारण बन बन ढ़ोलूं।
बस रात दिवस ॐ बोलूं।
और भूलूं ना तेरा नाम।।
हे राम......

मुझे अपने पास बुला ले।
मेरे मन मन्दिर को बसा लो।
हो जाऊं न मैं बदनाम।।
हे राम......

पंच तत्वों का यह चोला।
जग बनाया तूने मेला।
इस राज दिवानी को प्यारा तेरा धाम।।
हे राम......

तूने मोरी चुनरिया रंग

तूने मोरी चुनरिया, रंग डाली।
मैं तो लाल ही लाल, हुई लाली।
मैं तो हो गई, तेरी मतवाली ॥

रंग ड़ाला ऐसा निराला।
ना गोरा ना वह काला।
मैंने देखी भक्ति हरियाली ॥
मैं तो हो गई तेरी......

लागे ऐसा रंग जो छूटे ना।
विश्वास कभी मेरा टूटे ना।
तेरा स्नेह मैंने देखा माली ॥
मैं तो हो गई तेरी .....

सच्ची राह पर सदा चलती रहूं।
कोई गल्ती कभी न करती रहूं।
तेरे दामन की हूं मैं सवाली ॥
मैं तो हो गई तेरी......

मेरे लिए दाता लेना अवतार।
फिर मुझे करना भव से पार।
यहां पग पग पर है दलाली ॥
मैं तो हो गई तेरी......

आपनी 'राज' की लाज रखो महारानी।
तू ही रहती उस का सरताज।
नित्य भजन वह करती दे ताली॥
मैं तो हो गई तेरी .....

मैंने चादर रंगाई

मैंने चादर रंगाई, तेरे नाम की।
मैंने बिंदिया सजाई, तेरे नाम की॥
मैंने मेंहदी रचाई, तेरे नाम की॥

तेरा प्रेम बसा है, मेरे अंग अंग में।
मेरा तन मन डूबा, तेरे ही रंग मैं।
मैंने धूनी रमाई, तेरे नाम की॥

मन माला जपूंगी तेरी मैं दाता।
मेरी नज़रों में तू ही समाता।
मैंने धुन जो गाई, तेरे नाम की॥

सत्त संगत में जीवन बीते।
मस्ती के प्याले हम रहे पीते।
गीत माला बनाई, तेरे नाम की॥

मैंने आंसू से धोया तेरे पथ को।
तेरे द्वार पे आई फकीर बन के।
मैंने बिंदिया छुडाई, तेरे नाम की॥
कब आओगे मेरे गुरुदेव।
तेरे पथ पै खडी हूं गुरुदेव।
राज को मस्ती है, तेरे नाम की॥

हे शिव शंकर

हे शिव शंकर, मेरी रक्षा करो।
हे परमेश्वेवर मेरी रक्षा करो।
जग बडा भयंकर, रक्षा करो॥

मैं शरण तिहारी आई।
संग भक्ति अपनी लाई।
तुम हो ना दिग्मबर, रक्षा करो॥
मेरी रक्षा करो......

इक आस बन्दी है मुझ को।
भव पार करन पडेगा मुझ को।
मन मेरा मन्छन्दर मेरी रक्षा करो।
मेरी रक्षा करो .....

जब से मैंने है जन्म लिया।
कोई काम तो सुथरा नहीं किया।

हाथ थामे हो ईश्वर, मेरी रक्षा करो।
मेरी रक्षा करो .....

क्या खोया क्या मैंने पाया।
यूं ही सारा जीवन गंवाया।
मन करता तेरा आदर रक्षा करो॥
मेरी रक्षा करो ....

जब से दया की वर्षा बरसी।
तेरे आने को दाता मैं तरसी।
मुक्ति को दीजौ वर मेरी रक्षा करेगा।
मेरी रक्षा करो .....

मेरी नैया दाता डोलती है।
मेरी आत्मा तेरे संग बोलती है।
राज की पीड़ा हर, मेरी रक्षा करै।
हे शिव शंकर मेरी रक्षा करो॥

मेरे अनदेखे

मेरे अनदेखा, मेरे दाता,
तुम्हें हरद्वारे में खोजती हूं।
है अगर कठिन रास्ते भी,
हर बार मैं तुझ को ढूंढ़ती हूं।

हर रात तुम्ही ने मुझ को जगाया।
जाकर क्यों वापिस हम को रुलाया।

दिल परेशान है मेरा।
तत्व सार को खोजती हूं॥

मेरे तन्हाई के जीवन।
बस एक सहारा तेरा ही है।
जब चांद ढ़लने लगता है।
इक तार को मैं खोजती हूं॥

जब जब मैंने देख लिया।
जाने का खर्चा जुड न पाया।
तेरे ही मिलने के वास्ते।
बस प्यार को मैं खोजतीं हूं।

हर दिन जीवन के दिन बीते।
रातें बीती और क्षण जीते।
राज मैं सोचती हूं सदा यही।
इकरार को मैं खोजती हूं।

भूरे बाबा तेरी

भूरे बाबा तेरी, शान निराली है।
मेरे दाता तेरी शान प्यारी है।
मैं बगिया, तू मेरा माली है॥
भूरे बाबा तेरी शान......

मैंने सब कुछ तुम को सोंप दिया।
पूर्ण रूप से विश्वास किया।
आज आया कोई सवाली है।
भूरे बाबा तेरी शान......

मेरी आश मालिक पूर्ण करो।
संसार के सब दुख दूर हरो।
अब तक मेरी झोली खाली है।।
भूरे बाबा तेरी शान......

मुझे पूजा साधना आती नहीं।
यह माया कभी भाती नहीं।
तेरे आने से मेरी दिवाली है।
भूरे बाबा तेरी शान......

सब भक्त हाथ बान्धे आये हैं।
कोई अपना नहीं पराये हैं।
मेरे सुख की तू ही ताली है।।
भूरे बाबा तेरी शान......

मैं नमन करूं तेरे चरणों को।
मैं भजन लिखूं मन मन्दिर से।
राज ने आज गाई कवाली है।।

कौन जाने

कौन जाने, किनारा कब मिलेगा।
किस को मालूम है, सहारा कब मिलेगा।

बात यूं, यह तो कोई, नयी नहीं।
रोज़ जीवन में घटती रहीं।
मैं ढूंढ़ती हूं वह प्यारा कब मिलेगा।।

तेरे दरवाजे पर हूं बैठी।
अपनी पलकें बिछाये हुऐ।
जो अलग है वह तारा कब मिलेगा।

चन्द लमहों का यह जीवन।
कौन जाने कब बुझेगा।
मन को भाये, हम को वह चारा कब मिलेगा।।

बन्द दरवाजों को न खोलो।
वह तो बन्द ही पडें हैं।
जो कभी खोया है वह सितारा कब मिलेगा।।

आहें ना आहें भरने से।
नहीं गम मिटेगा।
हाय राज को आज, वह नज़ारा कब मिलेगा।
कौन जाने, वह किनारा कब मिलेगा।।

गीत

ज़िन्दगी एक धोखा भी है।
ज़िन्दगी एक सपना भी है।
ज़िन्दगी सहारा भी है।
ज़िन्दगी दो सांस ही तो है।
ज़िन्दगी चार दिन की है।
ज़िन्दगी ज़िन्दा दिली ही है।
ज़िन्दगी एक हंसी लम्हा है।
ज़िन्दगी सुन्दर सा सपना है।
ज़िन्दगी एक छोटी कहानी है।
ज़िन्दगी हरेक की ज़बानी है।
ज़िन्दगी बस एक रोशनी है।
ज़िन्दगी तेरी मेरी कुरबानी है।
ज़िन्दगी चन्द लमहों की आस है।

मुझे मेरे दाता

मुझे मेरे दाता ने, सब समझाया।
मैंने क्या खोया और क्या पाया ॥

बात यह है, जानी पहचानी।
बस, दो पल की, वह ज़िन्दगानी।
फिर क्यों मेरा मन भरमाया ॥
मैंने क्या खोया और......

ढूंढ जिस ने ली, हरि की मंज़िल।
होगी सदा, उस की हल मुश्किल।
जिस ने बेशक, संग दी है माया।
मैंने क्या खोया और......

कर ले चुपके से प्रभु से यारी।
और तज दे सारी दुनियांदारी।
रहती कब यहां किस की काया।
मैंने क्या खोया और......

दो दिनों का लगा है मेला।
क्यों खड़ा किया यहां झमेला।
मैंने रात दिन प्रभु भजन गाया।
मैंने क्या खोया और......

हम तो सभी एक माला के मोती।
बिखरे हुऐ हैं सभी, हैं जो ज्योति।

क्यों यह घनेरा अन्धेरा छाया।
मैंने क्या खोया और......

मस्तानी तो खुद ही है दीवानी।
उस बिन तेरे कोई कुछ नहीं जानी।
आज दाता ने यही फरमाया।
मैंने क्या खोया और......

भजन

प्रभु तू मुझे, प्राणों से प्यारा है।
बस तेरा ही एक सहारा है॥

मैंने दुनियां से नाता तोड़ा।
फिर दाता से चुपके जोडा।
तेरा अनुग्रह ही न्यारा है॥
बस तेरा ही एक......

मेरी विनती सुन लो दाता।
मुझे ज्ञान ध्यान नहीं आता।
मेरी बहती जीवन धारा है।
बस तेरा ही एक .....

कल तक तो मैं हकीर थी।
अब आज मैं फकीर हूं।
तू ही चांद सितारों का तार है।
बस तेरा ही एक.....

मैं दया की हूं अभिलाषी।
तेरे दरस की दाता प्यासी।
यह जग खिलौना प्यारा है।
बस तेरा ही एक......

कुछ पल की यह मनमानी।
फिर खत्म होगी कहानी।
मैंने पाया तेरा किनारा है।
बस तेरा ही एक......

मुझे भोग विलास से हुई तृप्ति।
हे दाता दीजिऐ शक्ति।
मुझे पार लगाना यह अर्ज हमारी है।
बस तेरा ही एक......

मुझे हनुमान सी दशा दीजिऐ।
मेरी दाता खुद ही सुध लीजिए।
फिर राज को आप मिलेगा प्यारा है।
बस तेरा ही एक सहारा है।

रबाह तू मुझ पर

रबाह तू मुझ पर मेहर करना।
मेरे यह सारे दुख गम हरना॥

प्रभु तू आना फिर नहीं जाना।
मेरे मन मन्दिर बस जाना।
और भी बहुत मुझे कुछ कहना॥
मेरे यह सारे दुख गम......

काट दे सारी माया ममता।
दीजिऐ जग में एक ही समता।
अब की बार मोहे पार लगाना।
मेरे यह सारे दुख गम......

चन्द सांसों की यह काया है।
झूठी जग की यह माया है।
जाना मोहे, यहां नहीं रहना॥
मेरे यह सारे दुख गम......

तुम जैसा कोई दानी नहीं है।
मुझ जैसा कोई बेमानी नहीं।
इस पथ पर मुझे सब ही है सहना॥
मेरे यह सारे दुख गम.....

अन्तरयामी तुम ही स्वामी।
तुम ही भक्तों के पथ गामी।

भव सागर से पार मुझे तरना ॥
मेरे यह सारे दुख गम......

तेरे मय के प्याले पीती हूं।
इसी लिए अब तक जीती हूं।
पीके मय, मस्ती में मुझे रहना ॥
मेरे यह सारे दुख गम......

तेरे दर पर हर दम आऊं।
तेरे ही गीत दाता गाऊं।
बस तेरे संग मुझे है चलना।
मेरे यह सारे दुख गम......

भव सिन्धी से पार लगाओ।
नाविक मेरे नाव चलाओ।
जन्म मरण के बन्धन राज़ का हरना ॥
रबाह तू मुझ पर मेहर करना ।०।

—●—

आज मैंने पा लिया

आज मैंने पा लिया, हरि धाम।
जिस में रहता है श्री राम।
बोलो राम, जय जय राम ॥

परम प्रकाश जब मैंने पाया।
भाग गई, अन्धियारी छाया।

मिल गया मुझे, अनन्त आराम।
बोलो राम जय......

तुम ने मुझे, राम धन दिया।
वृंदावन सा मुझे मन दिया।
जिस में नज़र आया धनश्याम ॥
बोलो राम जय......

मैंने कर ली है तेरी नोकरी।
हर दम हर पल केवल चाकरी।
मिट गये मन के झगड़े तमाम ॥
बोलो राम जय......

तू ही मेरा राम तू ही कृष्ण।
तू ही मेरा ब्रह्मा तू ही विष्णु।
पूर्ण हो गया मेरा काम।
बोलो राम जय.. ...

धन्य धन्य मेरे भाग्य तो जागे।
जब से मुझे लगन तेरी लागे।
पाया प्रकाश, अब आये शाम ॥
बोलो राम जय......

ज्ञान धात्री से, मोह को काटा।
प्रेम का संदेशा सब में बांटा।
अब है मुझे पूर्ण विश्राम ॥
बोलो राम जय......

ध्रुव प्रहलाद, शबरी अर्जुन।
इन को मिला अद्भुत भक्ति धन।
मुझे मिला बस तेरा नाम॥
बोलो राम जय .....

परम तत्व की महिमा क्या कहूं।
इस के बिना यहां कैसे रहूं।
जाना पड़ेगा मुझे नन्दगाम॥
बोलो जय राम......

राज फकीरी की विनती सुनना।
उस को अब मुक्ति दीजो।
मिला मुझे जीवन का अन्जाम॥
बोलो जय राम......

मैं लेती हूं तेरा नाम

मैं लेती हूं, हरि नाम, यही सोच कर।
मिलेगी शान्ति, और सुख मय सफर॥

मगर बेकरारी मिली क्यों प्रभु।
यह कैसा करार है बता दो प्रभु॥

अगर हम आप को, पा ना सके।
मगर बिना आप के, रह ना सके॥

चलो माना मेरे कर्म हैं खराब।
पिलाई क्यों आप ने प्रेम की शराब।

मैं कांटों की सेज पर सोती हूं।
कभी हंसती हूं कभी रोती हूं।

मिटा देना दाता, चौरासी चक्कर।
खत्म होगी जन्मों से मेरी टकर।

तुम्ही हो फकीरों के फकीर।
तुम्ही हो मेरी "राज" जीवन लकीर।

—●—

मुझे शिव शंकर से मिला दो

मुझे शिव शंकर से मिला दो।
मैं मस्तानी दर्द दीवानी।
मेरे मन के गुल तो खिला दो।

हरेक जन के मन में ढूंढू।
तेरे बिना बन बन ढ़ोलूं।
मुझे मुक्ति कोई दिला दो॥

मेरा जीवन यूं ही बीत गया।
अब तक मेरा मीत न मिला।
सांई का जादू चला दो॥

बिसर गये क्यों, मुझ से संवरिया।
तेरे बिना मैं हो गई बंवरिया।
मेरे शापों को तू ही दुला दो।

तेरे लिए मैं जोगन बनूंगी।
हे दाता तेरी पथ पर रहूंगी।
राज की ममता को दूर हटा दो।
मुझे शिव शंकर से मिला दो॥

इस जन्म मरण के

इस जन्म मरण के बन्धन से,
मोहे मुक्ति दे राम।
मैंने जीवन सारा गंवाया,
अब तो केवल रटती हूं तेरा नाम।

मैं शरण आई तिहारी।
मेरी पथ राखो बनवारी।
मैं चलते अब तो हारी।
आयु की आ गई शाम॥

धन यौवन का, मान मोहे नहीं।
बिन तेरे कोई मोहे ज्ञान नहीं।
मैंने अपना दुख तो छिपाया।
कैसे पहुंचूं तेरे धाम॥

सत्संग की थी अभिलाषा।
तेरे आने की लगी है आशा।

मेरी पूर्ण करो आकांक्षा।
हे मेरे ही दर धाम॥

चन्द सांसों की यह काया है।
जग ऐसे ही भरमाया है।
अब राज का पूर्ण करो हरकाम॥

—●—

धीरे धीरे मन हरि

धीरे धीरे मन, हरि स्मरण कर।
हरि स्मरण कर, जग से तू न डर॥

जग आनी जानी, रीत यहां।
अब कौन किसी का मीत यहां।
संसार यहां बड़ा भंयकर ॥
धीरे धीरे मन......

मस्ती में मस्त रहो बन्दे।
ज़रा छोड़ भी दे, झूठे धन्दे।
मिल जायेगा, आप ही शंकर॥
धीरे धीरे मन......

हर दम मन को लगाम लगा।
इन पाप पुण्यों को दूर भगा।
मिल जाओगे तो पाओगे श्री ईश्वर॥
धीरे धीरे मन......

सत्संग से तू मन को रंग ले।
पहले मन रंग ले फिर तन रंग ले।
फिर देख ले, दूर नहीं प्रभु दर॥
धीरे धीरे मन......

मन वाणी तू अमृत पी ले।
सत बनजा तू, सच ही पीले।
फिर कहां भटकना है घर घर॥
धीरे धीरे मन......

दाता के चरणों पर सिर रख ले।
फिर आत्मा को परमात्मा में देख ले।
इस दासी राज को देना वर।
धीरे धीरे मन हरि स्मरण कर॥

यह दुनियां मुसाफिर

यह दुनिया मुसाफिर खाना है।
यहां लगता, आना जाना है॥

दो पल की जिन्दगानी है।
यहां मौज मैला रवानी है।
तू चेत, क्या खोना, यहां क्या पाना है।

बस शान्ति को ही मुझे खोजना।
बदले में अपना दिल देना।
तुझे सदा ही अकेला रहना है॥

बेशक दो दिन का सपना है।
तू सोच ले यहाँ क्या अपना है।
प्रिय प्रभु के ही संग खोना है।।

यहां प्रीत किसी की सच्ची नहीं।
यह झूठी है कोई पकी नहीं।
राज को तुम्हें अपना बनाना है।
यह दुनियां मुसाफिर खाना है।।

—●—

तूने ही दाता यह

तूने ही दाता यह भला किया है।
स्मरण के लिए, यह देह दिया है।
इसी लिए मैंने, अमृत पिया है।।

तुम तो प्रभु हो दीन दयालो।
सुध मेरी लीजिऐ जगत कृपालो।
तेरे ही लिए मेरे प्राण जिये हैं।।

देखो घुमड़ घुमड़ बादल छाये।
दरस को तेरे, मुझे तरसाये।
मेरा सुख, किस ने छीन लिया है।।

देखी चारों तरफ तेरी प्रभुताई।
वही मेरे रोम रोम में समायी।
तूने ही सब योग भोग दिया है।।

तेरे आने से, मन रंग बरसे।
इस शुभ क्षण के लिए ही तरसे।
कहो राज को किस ने, लूट लिया है।
तूने दाता यह भला किया है।।

—●—

गीत

दाता तुम सुगन्ध हो, फैलोगे ही।
तुम तो आंसू हो, बह लोगे ही।
तुम भंवरे हो, रस चूसोगे ही।
तुम समय हो बदलोगे ही।
तुम चांदनी हो, शीतलता दोगे ही।
तुम पंछी हो, उड जाओगे ही।
तुम संगम हो, मेल खाओगे ही।
तुम सूरज हो, तप जाओगे ही।
तुम संगीत हो, गा लोगे ही।
तुम तो प्रकाश हो, दिख जाओगे ही।
तुम फूल हो, खिल जाओगे ही।
तुम तो वायु हो, चलते रहोगे ही।
तुम तो फकीर हो, छूट जाओगे ही।
तुम दाता हो, दया राज पर करोगे ही।

अरे मन अब तो शेष रहे

अरे मन अब तो शेष रहे, कुछ दिन।
भूल जा सब कुछ, तू सांसों को गिन॥

पथ मैं देखती हूं हरि को आना।
दाता मुझे ना, अब तरसाना।
क्यों फिर रहना, हम को खिन्न॥

झोली तेरी वह भर लेगा।
दुख संकट भी, कभी हर लेगा।
रहता नहीं यहां कभी कुछ भिन्न॥

छोड़ दे तुझे किस बात की चिन्ता।
तू क्यों पाप पुण्यों को गिनता।
हरि करेंगें उधार पल छिन्न॥

स्मरण करले, हरि भजन का।
रहता नहीं कुछ, किसी सजन का।
राज के कब, उतरेंगे ऋण।
अरे मन अब तो शेष रहे कुछ दिन॥

—●—

आरती भोले बाबा की

जय जय शिव शंकर, भोले बाबा।
मन प्राण तेरे संग, हो लिये बाबा।
निस दिन आरती, करूंगी बाबा॥

प्रभु सब का करो कल्याण।
क्या मांगू, दीजिऐ मुझे ज्ञान।
तेरे ही द्वार पै बस लूंगी बाबा।

अष्ट सिद्धि नवनिधि के दाता।
भजन बिना कुछ मुझे न भाता।
तेरी स्मरण से मैं तरूंगी बाबा॥

मेरी रसना सदा सुचेत रहेगी।
माया को कभी, पटकने न देगी।
तेरा ही ध्यान, दरूंगी बाबा॥

आरती बन्दना मैं करूं तेरी।
आशा पूर्ण करना तू मेरी।
राज अपने ही मन तोलेगी बाबा।
जय जय शिव शंकर भोले बाबा।

भजन

मेरे दाता, तू मेरी पहचान है।
तू ही मेरा मन प्राण वरदान है॥
तू ही मेरे मन में समाया हुआ,
कण कण में मेरे, छाया हुआ।
तू ही गीता का, अद्भुत ज्ञान है॥
तू ही मेरा मन......

तेरी महिमा, अपरम्पार है,
मेरा ध्यान ही तेरा, दीदार है।
आत्मा अमर, देह मेहमान हैं॥
तू ही मेरा मन......
तेरो शान दाता निराली है,
दस द्वारों की हरियाली है।
भक्तों को भक्ति ही जान है॥
तू ही मेरा मन......

दाता मेरे, करो मेहरबानी,
सत्य बोलती रहे, मेरी वाणी।
तेरे दर्शन का ही, मुझे अरमान है॥
तू ही मेरा मन......
ओ मेरे मनवा तू संभल ज़रा,
हरि सत्संग में, तू चल ज़रा।
इस विधि "राज" का कल्याण है॥
तू ही मेरा मन......

इस जग से मुझे क्या लेना है,
जिस का उधार, उसे चुकाना है।
मेरे पास जो भी है, तेरा दान है॥
मेरे दाता, तू मेरी पहचान है।०। (शुभ समाप्त